अंक 36

वर्ष-9वां

अक्टूबर-दिसंबर 2015

चहकती चेतना

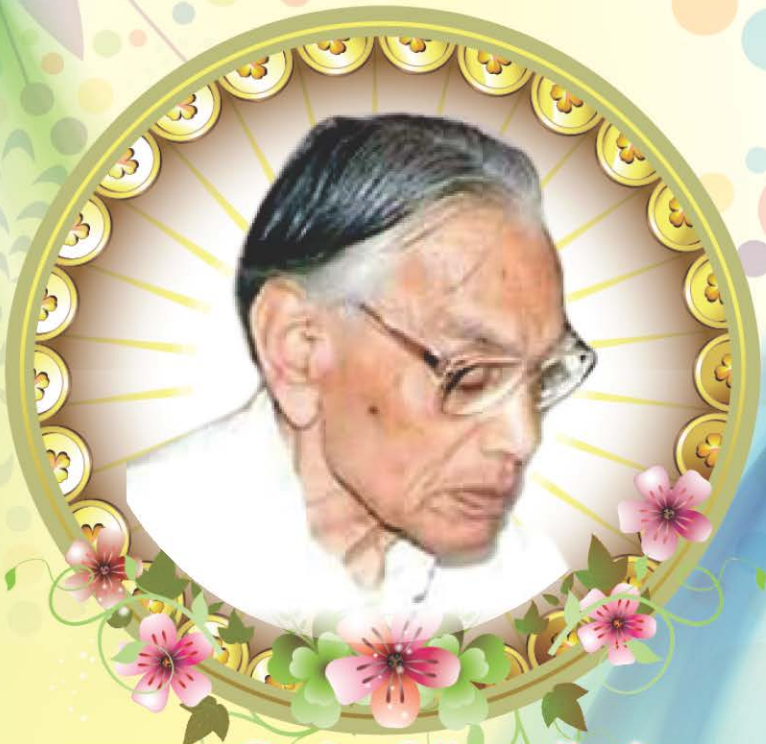

बाबू जुगलकिशोर जी "युगल", कोटा

जन्म - 9 अप्रैल 1924

देहविलय - 30 सितंबर 2015

प्रभो ! बीती विभावरी आज, हुआ अरुणोदय शीतल छांव।
झूमते शांति लता के कुंज, चलें प्रभु अब अपने उस गाँव ॥

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

असम का एकमात्र तीर्थ

श्री सूर्य पहाड़

गुवाहाटी से लगभग 90 मील की दूरी पर ग्वालपाड़ा जिले के अन्तर्गत सूर्य पहाड़ नामक एक पर्वत है। यहाँ पर सैकड़ों वर्षों से प्रतिवर्ष धार्मिक मेले का आयोजन होता रहा है।

सन् 1975 में यहाँ की एक गुफा की चट्टान में उत्कीर्ण दो खड्गासन प्रतिमायें प्राप्त हुईं।इन प्रतिमाओं पर बैल का चिन्ह एवं दोनों ओर द्वारपाल बने हुये हैं। पहले इन प्रतिमाओं को बुद्ध की मूर्तियों माना गया परन्तु मूर्तियों के आसन पर अंकित चिन्हों एवं सरकारी पुरातत्व विभाग के खोज से यह सिद्ध हो गया कि ये जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ हैं। 2008 में फिर से भगवान आदिनाथ की एक और प्रतिमा प्राप्त हुई। ये सभी प्रतिमायें लगभग 1200 वर्ष पुरानी हैं।

डॉ. एन.एन.लॉ द्वारा सम्पादित इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली, कलकत्ता भाग - 7 के पृष्ठ 441पर लिखा है -

गुप्तकाल और उसके बाद कई शताब्दियों तक बंगाल, असम और उड़ीसा में दिगम्बर धर्म बहुत प्रचलित था। यहाँ कई जिलों में नग्न मूर्तियाँ बिखरी हुईं हैं। पहाड़पुर गुप्तकाल में एक प्रचलित जैन केन्द्र था। यहाँ से एक प्राचीन ताम्र पत्र लेख प्राप्त हुआ है जिसमें दिगम्बर जैन मुनियों का उल्लेख है।

यहाँ पर प्राप्त एक शिला पर अनेक मूर्तियाँ बनी हुईं हैं। सभी मूर्तियाँ ध्यान और गम्भीर मुद्रा वालीं हैं। यह जैन प्रतिमाओं की विशिष्ट पहचान है। एक मूर्ति के हाथ में पिछी और कमण्डल है जो दिगम्बर जैन मुनि की ही प्रतीत होती है।

इसी पहाड़ पर एक पीठ है जिसे रंगा चारण पीठ कहा जाता है। एक कथा के अनुसार दिगम्बर जैन मुनि यहाँ पर विहार करते थे और पीठ पर एक विशाल छत है संभवतः यहाँ मुनिराजों का प्रवचन होता था।

सातवीं शताब्दी के समय सम्राट हर्ष के शासन काल में चीन देश से ह्वेनसांग नाम एक यात्री भारत आया था उसने लिखा है कि पूर्वी बंगाल मे अनेक साधु विचरण करते थे और जैन धर्म का प्रचार करते थे। सम्राट हर्ष जैन धर्म से बहुत प्रभावित थे, हो सकता उनके ही प्रभाव में इन प्रतिमाओं को उत्कीर्ण करवाया गया हो।

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

JULY - SEPT. 2015

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, कन्नौज
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	कविता - सीख/हरी घास	2
3.	संपादकीय	3
4.	कैसा ये त्यौहार	4
5.	किसका फोटो	5
6.	अष्ट प्रतिहार्य	6-7
7.	सिगड़ी नहीं मोक्ष की पगड़ी	8
8.	धन्य है ऐसे नेता	9
9.	जैन धर्म और भारत के सम्राट	10-11
10.	यह भी हिंसा है	12
11.	लाडू नहीं श्रीफल	13
12.	अब नहीं छोडूंगा	14-15
13.	परिवर्तन	16
14.	कॉमिक्स	17-19
15.	प्रेम में बोझ नहीं	20
16.	प्रधानमंत्री ने मान ली बात..	21
17.	कविता - रेल	22
18.	चमड़े की पहचान	23
19.	अद्भुत राजा	24
20.	मैं पूछूं एक पहेली	25
21.	अब नहीं फोडूंगा	26-27
22.	आपके प्रश्न जिनागम के उत्तर	28
23.	कुक्कू चिड़िया	29
24.	हाथी की क्या	30
25.	चेत-चेतन-चेत	31
26.	सहयोग/सूचना	32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

कविता -

सीख

बच्चो!नित्य नियम से पढ़ना।
हित पर दृष्टि रखकर पढ़ना।।
आदर और विनय से पढ़ना।
पढ़कर जाना आकर पढ़ना।।
समझ-समझकर के तुम पढ़ना।
पिछला पाठ याद तुम रखना।।
प्रातः जल्दी उठकर पढ़ना।
समयचक्र का पालन करना।।
तजने योग्य सहज ही तजना।
भजने योग्य सहज ही भजना।।
पढ़कर के आतम हित करना।
देश धर्म की उन्नति करना।
नाम गुरु का नहीं छिपाना।
विद्यालय का नाम बढ़ाना।।

- बा. ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्'

हरी घास

बेटा - मम्मी ! चलो पार्क तुम लेकर,
झूला हम सब झूलेंगे।
भईया के संग हरी घास पर,
खेलेंगे और कूदेंगे।।
मम्मी - हरी घास एकेन्द्रिय जीव है,
उस पर कभी न चलना।
बहुत पाप लगता है बेटा,
पैर कभी न रखना।।
सूखी जगह पर खेलो बेटा,
आगे ऐसे बढ़ना।
मम्मी की बातें तुम मानो तुम,
दया भाव उर रखना।।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

संपादक की कलम से....

प्यारे पाठको! आप सबको मेरा जय जिनेन्द्र। आप सबने दशलक्षण महापर्व का बहुत लाभ लिया होगा और इन दिनों में विशेष संयम का पालन किया होगा। हमारा तो पूरा जीवन संयममय होना चाहिये, ये पर्व तो हमें जीवन की कला सिखाने आते हैं। जैसे हम अपना मोबाइल प्रतिदिन चार्ज करते हैं, यदि चार्ज न किया जाये तो वह बन्द हो जाता है। ऐसे ही ये दशलक्षण पर्व, अष्टान्हिका पर्व, अष्टमी, चतुर्दशी, रक्षाबन्धन जैसे पर्व हमें अपने आत्मा के प्रति कर्तव्यों की याद दिलाने आते हैं।

अब आगामी 11 नवम्बर को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण महोत्सव दीपावली आने वाला है। सारा देश इस पर्व को रोशनी का त्याहार मानता है और धन के लोभ में लक्ष्मी देवी की पूजन करता है और पटाखे फोड़कर प्रसन्नता का अनुभव करता है। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि वे धर्म के नाम भी भयंकर पाप बन्ध ही करते हैं। महावीर स्वामी के नाम से प्रचलित सिद्धान्त जियो और जीने दो के विरुद्ध पटाखे फोड़कर अनन्त जीवों की हत्या करके और कुदेव के रूप में लक्ष्मी, तराजू, रुपयों, दुकान की पूजा करके पाप ही कमाता है।

मेरा आपसे और अभिभावकों से निवेदन है कि इस महान पवित्र दिवस पर संयम से रहें, रात्रि आहार का त्याग रखें, बाजार की अभक्ष्य वस्तुयें न खायें, भगवान महावीर स्वामी की और गौतम गणधर की मांगलिक पूजन करें, रात्रि में सोने से पूर्व पटाखों की हिंसा में मारे जाने वाले अनन्त जीवों के प्रति करुणा रखते हुये णमोकार मन्त्र पढ़कर विश्राम करें और स्वयं भी भगवान महावीर जैसे भगवान बनने की भावना भायें। यही वीर निर्वाण दिवस की सार्थकता है।मुझे विश्वास है कि आप मेरी बात पर अवश्य ध्यान देंगे।

- आपका ही
विराग शास्त्री

कैसा ये त्यौहार

एक दिवस बोले सब प्राणी
अपने साथी संग से
घर से बाहर नहीं निकलना
बचना चाहो मौत से
खटमल, मच्छर, मक्खी कांपे
गाय,बैल, पशु, भैंस भी
कीड़े थर-थर कांप रहे थे
भाग रहे थे सांप भी
कॉक्रोच तो रोता फिरता
करे विनय भगवान से
मुझे बचा लो दयानाथ जी
मुझे प्रेम है प्राण से
चेतन भैया पूछे उससे
कहो आज क्या बात है
क्या कोई प्रलय आ गया
या आया यमराज है
कॉक्रोच यूं रोता बोला -
चेतन भैया क्या बतलाऊँ
सर पर मौत सवार है
वीर प्रभु निर्वाण महोत्सव
दीवाली त्यौहार है
कॉक्रोच तू नहीं जानता
यह तो पर्व महान है
जियो जीने दो कहने वाले
महावीर भगवान हैं
सत्य अहिंसा के उदघोषक
का निर्वाण महान है
निर्भय होकर रहो जगत में
तू इससे अनजान है।
कॉक्रोच बोला यूं रोते
नहीं समझते बात यही तो
महावीर की जय जय कहते
फटाखे कितने फोड़ते
फटाखे के जलने से
या उसकी आवाज से
जल जाते या मर जाते हम
भाग रहे यमराज से
हम निर्दोष हैं छोटे प्राणी
जीने का अधिकार है
प्राण नहीं दे सकते तो
मारने का क्या अधिकार हे
जल जाओ अग्नि से थोड़ा भी
दुख कितना तुम पाते हो
हम प्राणी का नहीं मूल्य जो
हमको यूं ही जलाते हो
ध्यान रहे ये बात मेरी सुन
जो तुम फटाखे जलाओगे
काल अनंत तक रोना तुम भी
सुखी कभी न हो पाओगे।

– विराग शास्त्री

किसका फोटो ?

''केवल रवि किरणों से जिसका सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर...।'' पक्तियों वाली देव-शास्त्र-गुरु पूजन के रचनाकार बाबू जुगल किशोरजी 'युगल' का जीवन अध्यात्म और धर्म से ओत-प्रोत था। देश-विदेश के अनेक साधर्मी उनसे जिनधर्म का रहस्य जानने और अपनी शंकाओं का समाधान करते आते रहते थे।

एक बार कुछ विद्यार्थी उनसे मिलने पहुँचे और चर्चा के बाद उनके साथ एक फोटो खींचने की इच्छा की। बाबूजी तुरन्त बोले - किसका फोटो लोगे ? जिसका फोटो तुम्हारे कैमरे में आयेगा वह मैं हूँ नहीं, वह इस शरीर का फोटो होगा और मेरा फोटो इस कैमरे में नहीं आ सकता। उसके लिये मेरे ज्ञान का कैमरा काम आयेगा।

साधारणसी बात में भी बाबूजी का आसाधारण चिन्तन सुनकर सभी प्रसन्न हो गये। ऐसे थे हमारे बाबूजी।

चोट भी दवा बन गई

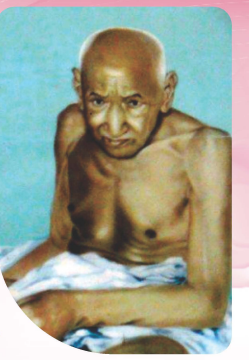

बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध संत क्षुल्लक गणेशप्रसादजी वर्णी ने जिनधर्म प्रभावना में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया और सैकड़ों पाठशालाओं की स्थापना करवाई।एक बार वे बचपन में अपने दोस्तों के साथ गिल्ली-डंडा का खेल रहे थे। खेल में उन्होंने डंडे से गिल्ली को जोर से मारा । उसी समय एक व्यक्ति सामने से आ रहा था, वह गिल्ली उसकी आंख में लगी और आंख से खून निकलने लगा। यह देखकर वर्णीजी घबराकर घर भाग गये।

लगभग 1 सप्ताह बाद वही व्यक्ति उनके घर की ओर आता दिखाई दिया। वर्णीजी ने सोचा- जरूर वह मेरी शिकायत माँ से करेगा। माँ की डांट से बचने के लिये वे अपने घर के ही एक बड़े बर्तन में छिपकर बैठ गये।

उस व्यक्ति ने माँ ने पूछा कि आपका बेटा कहाँ है? मुझे उसको धन्यवाद देना है। मेरी आंख में बहुत तकलीफ थी। एक सप्ताह पहले आपके बेटे की गिल्ली से सारा गन्दा खून निकल गया और मेरी आंख अब अच्छी हो गई है।

यह सुनकर वर्णी को बड़ा आश्चर्य हुआ। बड़े होने जब उन्होंने जैन सिद्धान्तों का अध्ययन किया तो मालूम हुआ कि यदि पुण्य उदय हो तो पत्थर भी दवा का कार्य करता है और पाप का उदय हो तो अच्छी दवाई भी कोई काम नहीं आती।

आशीष शास्त्री, टीकमगढ़

अष्ट प्रतिहार्य

तीर्थंकर परमात्मा को केवलज्ञान होने पर चारों प्रकार के देव उनकी सेवा में आते हैं और समवशरण में अष्ट प्रातिहार्य होते हैं। ये प्रातिहार्य तीर्थंकर परमात्मा के पहचान के विशेष चिन्ह हैं।

देवेन्द्रों द्वारा नियुक्त सेवक, प्रतिहार का कार्य करने वाले देवता को अरिहन्त के प्रतिहार कहा जाता है और इन सेवकों द्वारा भक्ति हेतु रचित अशोक वृक्ष आदि को प्रातिहार्य कहा जाता है। आइये जाने इनका महत्व -

ये आठ प्रातिहार्य निम्न हैं '

१. अशोक वृक्ष - यह समवशरण में तीर्थंकर परमात्मा के सिंहासन पर शोभायमान होता है। ये देव रचित और अजीव होता है। शोक रहित होने से इसे अशोक कहा जाता है अर्थात् तीर्थंकर का सान्निध्य पाने वाले सभी जीव शोक रहित हो जाते हैं।

तीर्थंकर मुनिराज जिन-जिन वृक्षों के नीचे दीक्षा लेते हैं, वही उनका अशोक वृक्ष होता है। वृक्ष सहनशीलता का प्रतीक है, सर्दी, गर्मी, बरसात को समता भाव से सहन करता है ऐसे ही जो जीव कर्म के उदय के अनुकूलता-प्रतिकूलता के मध्य आत्मस्वभाव में लीन होता है उसे कैवल्य का फल मिलता है।

२.सिंहासन - समवशरण के मध्य रत्नमयी तीन पीठिकाओं के ऊपर उत्तम रत्नों से निर्मित चार सिंहासन होते हैं। इनमें एक पर तीर्थंकर परमात्मा स्वयं विराजमान होते हैं और शेष पर उनके प्रतिरूप होते हैं। सिंहासन के ऊपर सहस्रदल कमल होता है भगवान उससे चार अंगुल अधर में विराजमान होते हैं।

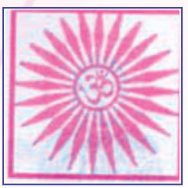

३.भामण्डल - भगवान के मस्तक के चारों ओर अति सुन्दर, अनेक सूर्यों की रोशनी से भी अधिक प्रकाशमान मनोहर भामण्डल होता है। सामान्य पुरुषों के विशेष तेज को आभामण्डल कहा जाता है, जिसमें परिवर्तन होता रहता है। तीर्थंकरों के भामण्डल सदा एकसा ही होता है। इस भामण्डल में भव्य जीव अपने भूतकाल के तीन भव, भविष्य के तीन भव और वर्तमान का एक भव देख सकता है।

४. तीन छत्र - भगवान के मस्तक के ऊपर रत्नमय तीन छत्र शोभित होते हैं और ये छत्र तीनों लोक के स्वामीपने के सूचक हैं।

५. चंवर – भगवान के दोनों ओर देवों द्वारा चौंसठ चंवर ढ़ोरे जाते हैं। चे चंवर कमलनाल के समान स्वच्छ और सुन्दर होते हैं। चंवर के रेशे इतने सफेद और तेजस्वी होते हैं कि उनमें से चारों ओर किरणें निकलतीं हुईं प्रतीत होती हैं। चंवर के दण्ड रत्ननिर्मित होते हैं। चंवर को ऊपर-नीचे किया जाना यह सूचित करता है कि प्रभु को नमस्कार करने से सज्जन उच्चगति को प्राप्त करते हैं। आचार्य मानतुंग के शब्दों में - देवों द्वारा ढुराये जाने वाले चंवर ऐसे लगते हैं मानों स्वर्णमय सुमेरु पर्वत पर दो निर्मल झरने झर रहे हों।

६. सुरपुष्पवृष्टि – भगवान के मस्तक पर आकाश से सुगन्धित जल की बूंदों से युक्त मन्दार, सुन्दर, नमेरु, पारिजात तथा सन्तानक आदि उत्तम वृक्षों के उर्ध्वमुखी दिव्य फूलों की वर्षा होती है।

७.देव दुन्दुभि – समवशरण में आकाश में देवों द्वारा दुन्दुभि नाद होता है। यह ध्वनि सुनकर भव्यजनों को अत्यन्त आनन्द होता है। इस ध्वनि के द्वारा ही भगवान के आगमन की सूचना मिलती है। यह दुन्दुभि इस बात का सूचक है कि तीर्थंकर परमात्मा ने मोह राजा को जीतकर अपने जन्म-मरण का अभाव कर दिया है।

८. दिव्यध्वनि – समवशरण में भगवान की दिव्यध्वनि खिरती है। यह ध्वनि अत्यन्त मधुर, मनोहर, अतिगम्भीर और देव, तिर्यन्च और मनुष्य गति के जीवों को समझ में आने वाली होती है। दिव्यध्वनि के समय दन्त, तालु, ओंठ आदि नहीं हिलते। भगवान की वाणी अठारह महाभाषा और सात सौ लघुभाषाओं में परिवर्तित हो जाती है।

तीर्थंकर की दिव्यध्वनि मागध जाति के व्यंतर देवों के निमित्त से सभी जीवों को अपनी-अपनी भाषा में सुनाई पड़ती है इसलिये इसे अर्धमागधी भाषा भी कहा जाता है।

बच्चों में संस्कार

इन्दौर के एक प्रतिष्ठित परिवार के बच्चे जब भोजन करने अपने घर के चौके में पहुँचे तो उनके बाबा सेठ राजकुमार सिंह कासलीवाल ने कहा - क्या आप सबने जिनेन्द्रभगवान के दर्शन किये ? बच्चे चुप रहे गये तो सेठ साहब बोले - आज के बाद बिना जिन दर्शन किये चौके में पैर मत रखना। ऐसा था संस्कार देने का तरीका।

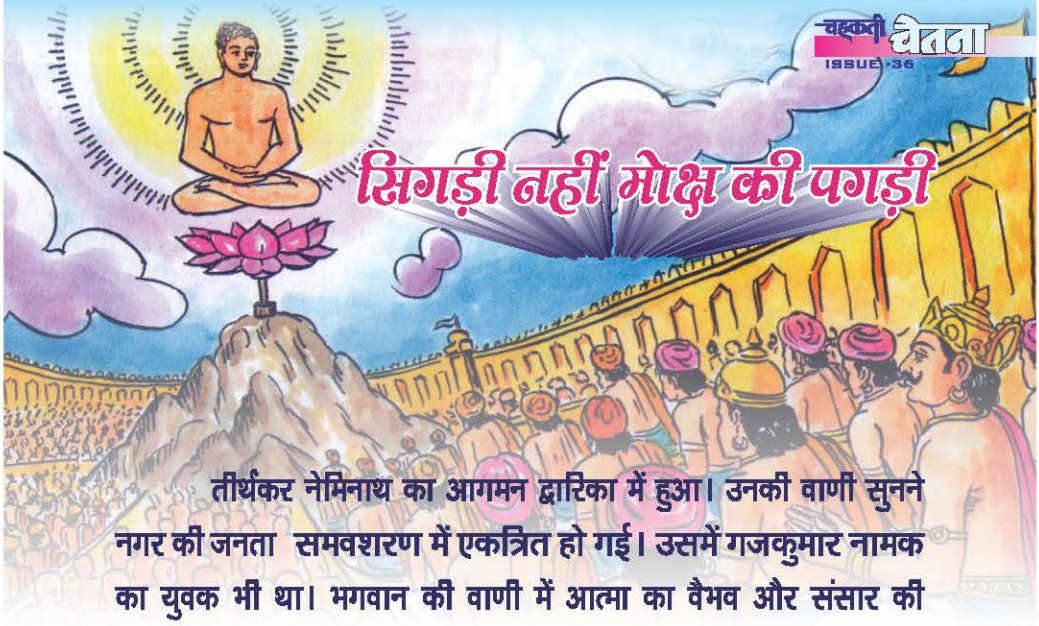

सिगड़ी नहीं मोक्ष की पगड़ी

तीर्थंकर नेमिनाथ का आगमन द्वारिका में हुआ। उनकी वाणी सुनने नगर की जनता समवशरण में एकत्रित हो गई। उसमें गजकुमार नामक का युवक भी था। भगवान की वाणी में आत्मा का वैभव और संसार की असारता सुनकर उसे वैराग्य हो गया। उसने मुनि दीक्षा ले ली।

सोमिल ने अपने दामाद गजकुमार को मुनि अवस्था में घोर जंगल के बीच तपस्या करते देखा। दामाद को देखकर सोमिल को अपनी पुत्री का मासूम चेहरा दिखाई देने लगा। उसे लगा कि मैंने कितने सपने देखे और अपनी कोमलसी पुत्री का विवाह इस गजकुमार से किया। पर इसने युवा अवस्था में उसे त्यागकर उसे अकेला छोड़ दिया। इसने मेरी पुत्री के साथ अन्याय किया है। यदि इसे मुनि बनना था तो इसने मेरी पुत्री से विवाह ही क्यों किया ? कम से कम मेरी पुत्री का जीवन तो बरबाद नहीं होता। सोमिल कोध से लाल हो गया। उसके मन में बदला लेने का भयंकर परिणाम आ गया और सोचने लगा – मेरी पुत्री का जीवन खराब कर यहाँ तपस्या करने का नाटक कर रहा है। कोध में आकर सोमिल सेठ गजकुमार मुनि के पास पहुँचा। उसने गजकुमार के सिर पर गीली मिट्टी का घेरा बनाया और उसमें जलते हुये अंगारे डालने लगा। अंगारों से गजकुमार का सिर जलने लगा। लेकिन गजकुमार तो आत्मस्वभाव का आनंद ले रहे थे। सिर पर अंगारे की गर्मी और अंदर में चैतन्य के अतींन्द्रिय आंनद का सुख। वे अपने स्वरूप में लीन रहे। उन्होंने सोमिल पर कोध व्यक्त नहीं किया और अंदर विचार किया यह ससुर द्वारा सिर पर बांधी गई सिगड़ी नहीं मोक्ष की पगड़ी है।

धन्य है ऐसे नेता .....

जयपुर में अर्जुनलाल सेठी स्वतन्त्रता सेनानियों के पितामह के नाम से विख्यात थे। महात्मा गांधी और लोकमान्य तिलक भी अर्जुनलालजी की प्रशंसा करते थे। सन् 1914 में उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया और उन्हें बैलूर मद्रास जेल में डाल दिया गया। उनका जिनेन्द्र दर्शन करके ही भोजन ग्रहण करने का नियम था। लेकिन अंग्रेजों ने जिनेन्द्र दर्शन करवाने से स्पष्ट मना कर दिया। अर्जुनलालजी अपने नियम पर दृढ़ रहे और 70 दिनों तक मात्र गर्म पानी पीते रहे और भोजन ग्रहण नहीं किया। बाद में अंग्रेजों ने उनके नियम के सामने हार मानकर उन्हें छोड़ दिया और बाद में दर्शन करके ही उन्होंने भोजन ग्रहण किया।

ऐसे थे हमारे अर्जुनलालजी सेठी....।

सज्जनता

इंग्लैण्ड का बादशाह जेम्स अपना खजाना भरने के लिये राज्य के अमीरों को धन लेकर उपाधियाँ दिया करता था। जेम्स यह जानता था कि उपाधि लेकर कोई महान नहीं बन सकता, परन्तु मूर्ख और यश के लालची व्यक्तियों से धन लेकर उपाधि देता रहता था।

एक बाद नगर का सबसे धनी व्यक्ति उनके दरबार में आया। बादशाह ने उससे पूछा - आपको कौनसी उपाधि चाहिये ? इस प्रश्न के उत्तर में धनवान व्यक्ति ने कहा - आप मुझे सज्जन बना दीजिये। बादशाह थोड़ी देर तो चुप रहे फिर गम्भीर स्वर में बोले - देखिये महोदय! धन के बदले में मैं आपको लार्ड, ड्यूक, सर आदि उपाधि दे सकता हूँ परन्तु आपको सज्जन बना पाना मेरे बस की बात नहीं। सज्जन बनने के लिये सद्गुण होने चाहिये।

वह धनवान व्यक्ति चुपचाप वहाँ से चला गया।

पहेली के उत्तर 1. अरहंत परमात्मा 2. आत्मा 3. कषाय 4. दीपों की आवली 5. ज्ञान दाता 6. अरहंत परमात्मा 7. जैन धर्म

जैनधर्म और भारत के सम्राट

समय-समय पर भारतवर्ष के अनेक भागों पर अनेक राजाओं-सम्राटों ने शासन किया है। इनमें अनेक राजा जैन थे और अनेक राजाओं ने जैन धर्म की प्रभावना में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। प्रस्तुत है ऐसे राजाओं के बारे यह लेख -

चालुक्य वंशी सम्राट जय सिंह जैन धर्म के बहुत श्रद्धानी एवं आचार्य गुणचन्द्र के परम भक्त थे। इनके पुत्र रणराग भी जैन धर्म के प्रेमी थे। इन्होंने जिनमंदिरों को बहुत संपत्ति भेंट दी थी। रणराग के पुत्र पुलिकेशी (550 ईस्वी) भी अपने पिता एवं दादा के समान जैन धर्म पर श्रद्धा रखते थे। इन्होंने जिनमंदिरों का निर्माण करवाया था। पुलिकेशी के पुत्र महाराजा कीर्तिवर्मा (566-597 ईस्वी) ने भी विशाल जिनमंदिर का निर्माण करवाया और जैन कवि रविकीर्ति का राजसभा में सन्मान किया। साथ जिनमंदिर की व्यवस्था के लिये दो गांव भी भेंट किये।

महराजा विनयादित्य (680-696 ईस्वी) और महाराजा विजयादित्य (696-733 ईस्वी) ने जैन मंदिरों को बहुत दान किया और पुजारियों का सन्मान भी किया। विजयादित्य के पुत्र विक्रमादित्य द्वितीय (733-746 ईस्वी) ने जैन मंदिरों की मरम्मत करवाई और दान भी दिया। राजा अरिकेसरी भी जैन धर्म के अनन्य भक्त थे। इनके सेनापति और राजमन्त्री प्रसिद्ध जैन कवि पम्प थे। कवि पम्प ने 941 ई. में पम्प रामायण की रचना की थी। आदिपुराण और भारत भी इन्हीं की रचना थी।

पूर्वीय चालुक्य वंशी सम्राट विष्णुवर्द्धन तृतीय आचार्य कालीभद्र के भक्त थे। कुब्ज विष्णुवर्द्धन की रानी ने जैन धर्म पर अगाध श्रद्धा व्यक्त करते हुये अनेक गांव जिन मंदिरों को भेंट दिये। महाराजा अम्म ने भी जैन मंदिरों को दान दिया। इनके वीर सेनापति दुर्गराज भी जैन धर्म के अनुयायी थे, इन्हें जैन धर्म पर दृढ़ता

के लिये जैनधर्म का स्तम्भ कहा जाता था।

पश्चिमी चालुक्य वंश के राजा तैलप द्वितीय (973-997 ईस्वी) भी जैन धर्म के दृढ़ विश्वासी थे। इन्होंने जैन कवि श्री अन्नजी को सन्मान देते हुये उन्हें कवि रत्न, कवि कुन्जराय, आदि पदवियाँ प्रदान कीं और कवि के साथ सन्मान में स्वर्णदण्ड, चंवर, छत्र, हाथी आदि इनके साथ चलते थे। श्री अन्नजी ने सेनापति मल्लप की पुत्री अतिमव्वे के अध्ययन के लिये 993 ई. में अजितनाथ पुराण की रचना की। अतिमव्वे ने जिनेन्द्रभक्ति में सोने-चांदी की सैकड़ों प्रतिमायें विराजमान करवाईं थीं। बहुत दान देने के लिये इन्हें "दानचिन्तामणि" कहा जाता था।

राजा जयसिंह आचार्य वादीराज सूरि के परम भक्त थे। इनके दरबार में हुये शास्त्रार्थ में आचार्य वादिराज सूरि ने भिन्न-भिन्न धर्मों के प्रसिद्ध विद्वानों का पराजित किया। तब महाराज ने इन्हें जय पत्र और "जगदेकमल्लवादी"(द्दि अूद) की उपाधि प्रदान की। बाद में आचार्य वादीराज को कुष्ठ रोग हो गया तो राजा व्याकुल हो गये। राजा को खुश करने के लिये एक दरबारी बोला - "महाराज! चिन्ता न करें। यह समाचार झूठा है। राजा ने कहा - कुछ भी हो, मैं कल मुनिराज के दर्शन के लिये जाऊँगा।" दरबारी घबरा गया कि अब मेरे झूठ का सबको पता चल जायेगा। वह भागा-भागा मुनि वादिराज के पास गया और उन्हें सारी घटना सुनाकर बचाने का निवेदन किया। मुनिराज ने उसे शान्त रहने का उपदेश दिया और स्वयं जिनेन्द्रभगवान की भक्ति में लीन हुये और एकीभाव स्तोत्र की रचना की। अगले दिन जब राजा आये तो मुनिराज की सोने के समान काया देखकर अत्यंत प्रसन्न हो गये। राजा ने कुष्ठ रोग का समाचार देने वाले सेवक को बुलाया और उससे झूठ कहने का कारण पूछा। मुनिराज ने कहा - इस शरीर में सच में कुष्ठ रोग हो गया था, परन्तु पुण्य उदय और जिनेन्द्र भक्ति के कारण यह रोग चला गया।

महाराजा विक्रमादित्य (1077-1126 ई.) आचार्य अर्हन्तनन्दी के शिष्य थे।

इस तरह चालुक्य वंशी राजाओं ने लगभग हर समय जैनधर्म की प्रभावना में सदैव अपना योगदान दिया।

- साभार - कर्नाटक कल्चर : पृष्ठ- 29

यह भी हिंसा है

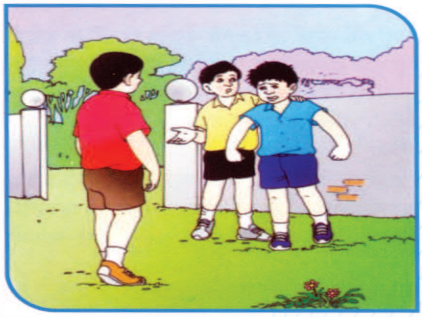

- ऐसा न बोलें मैं तेरे दांत तोड़ दूँगा, जमीन में गाड़ दूँगा, सिर काट डालूँगा, हाथ-पैर तोड़ दूँगा आदि कहना भी हिंसा है।
- किसी बीमार-दुःखी व्यक्ति के लिये उसके मरने की प्रार्थना करना और यह सोचना कि मरने से उसे दुःख से मुक्ति मिल जायेगी - ऐसा विचार भी हिंसा है।
- जन्म लेते ही मर जाते तो अच्छा था। हे भगवान् ये कब मरेगा, ये जल्दी मर जाये तो हम सुख से रहेंगे। इस प्रकार विचार करना भी हिंसा है।
- हे भगवान अब तो मुझे उठा ले, भगवान मुझे कब उठायेगा - परेशान होकर ऐसे विचार करना भी हिंसा है।
- कोई बहुत दिनों से बीमार है, दुःखी है और उसके मर जाने पर बेचारा बहुत दुःखी था, रोग की उसे बहुत तकलीफ थी, अब सुखी हो गया - ऐसा विचार करना भी हिंसा है।
- पागल कुत्ते आदि को मरवाने, घर में चूहे, कॉकरोच, मक्खी, मच्छर, मकड़ी आदि जीवों को मारने के उपकरण लगाना संकल्पी हिंसा का महापाप है।
- बीमारी को ठीक करने के लिये, दूसरे की संतुष्ट करने के लिये अभक्ष्य दवाईयों का सेवन भी हिंसा है।
- झगड़े, निराशा, निर्धनता, संसार से बचने के लिये आत्महत्या करना तो बहुत ही जघन्य अपराध है।

जन्म दिवस की शुभकामनायें

चेतन भाव ही जीव है, यह ही शुद्ध स्वभाव।
जन्म मरण का अंत करो, जीविका यही प्रभाव।।

जीविका हेमन्त जैन, गुवाहाटी 17 नवम्बर 2015

लाड़ू नहीं श्रीफल

अरे पर्व! जय जिनेन्द्र। कहाँ जा रहे हो और ये तुम्हारे हाथ में क्या है?

जिनमंदिर जा रहा हूँ भाई! कल दीपावली का त्यौहार है ना। तो माँ ने ये बेसन, घी और शक्कर मंदिरजी में देने को कहा है।

जिनमंदिर में बेसन, घी और शक्कर का क्या काम..?

अरे! तुम्हें पता नहीं। कल भगवान महावीर के निर्वाण उत्सव पर निर्वाण लाडू चढ़ाये जायेंगे तो मंदिर में बूंदी के लड्डू बन रहे हैं।

क्या तुम्हें लगता है ये सही है ?

क्या मतलब है तुम्हारा?

अरे पर्व! तुम स्वयं ही सोचो। क्या हमें जिनमंदिर में ऐसा कोई काम करना चाहिये जिससे हिंसा को दोष लगे? जिनेन्द्र भगवान को अचित्त द्रव्य (जिसमें जीव न हों या जिसमें जीव होने की संभावना भी न हो) अर्पित किये जाते हैं। ये सब तो सचित्त पदार्थ हैं और लड्डू जब भगवान को चढ़ायेंगे तो चींटी आदि कितने जीव पैदा हो जायेंगे और सब मारे जायेंगे और लड्डू बनाने में भी कितनी हिंसा होगी क्या हम अहिंसा के सम्राट के नाम पर ही हिंसा करेंगे ...?

बात तो तुम्हारी सही है पर.... फिर हम क्या करें ?

अरे भाई! यह प्रसन्नता का पर्व है। इस दिन भगवान महावीर को निर्वाण पद की प्राप्ति हुई थी और गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी । हमें प्रतीक के रूप में श्रीफल (नारियल गोला) द्रव्य के रूप में अर्पित करना चाहिये।

ठीक है भाई! मैं घर वापस जाता हूँ और मम्मी से भी ये सारी बातें कहूँगा।

दूसरे दिन पर्व और उसकी माँ श्रीफल लेकर जिनमंदिर पहुँचे। साथ में आये भक्तों ने भगवान को बूंदी का लाडू चढ़ाया।कई भक्तों के हाथ से लड्डू टूटकर नीचे गिर गया। लगभग 2 घंटे बाद सैकड़ों चींटियाँ वहाँ आ गईं और लोगों के पैरों से अनेक चीटियाँ दबकर मर रहीं थीं।

ये देखकर पर्व की आंख में आंसू आ गये वह मन मन ही बोल उठा - काश..! सभी लोग अहिंसा का स्वरूप समझ जाते तो अहिंसा के उद्घोषक महावीर के नाम पर यह हिंसा नहीं होती....

- विराग शास्त्री

अब नहीं छोड़ूंगा

ये क्या विज्ञ! आज फिर टिफिन का पूरा भोजन नहीं किया। तुम्हारी तो आदत पड़ गई है जूठा भोजन छोड़ने की घर पर यही हॉल और स्कूल में भी....

अरे मम्मी! आप भी छोटी-छोटी सी बात पर शिकायत करती रहती हो....

विज्ञ! तुम्हे ये छोटी सी बात लगती है तुम जानते हो .....

मम्मी बस करो ना..कितना प्रवचन दोगी मुझे ... - विज्ञ पैर पटकते हुये बोला।

तुम्हें यह प्रवचन लगता है, परन्तु मैं तुम्हारे भले के लिये ही कह रही हूँ ... - मम्मी दुःखी और निराश होकर बोलीं।

अरे मम्मी! हो गया ना ... - विज्ञ मम्मी को हाथ जोड़कर बोला।

मम्मी (दुःखी मन से) - ठीक है विज्ञ! तुम्हें बुरा लगता है तो मैं आगे से कभी नहीं बोलूँगी।

कुछ दिन बाद विज्ञ अपने मम्मी-पापा के साथ एक पार्टी में गया । पार्टी से लौटते समय उसे कुछ बच्चे दिखे जो पार्टी के जूठे बर्तन में से भोजन बीनकर खा रहे थे। विज्ञ बोला - देखो पापा! कितने गन्दे बच्चे हैं, जो प्लेटों से जूठा भोजन निकालकर खा रहे हैं। - विज्ञ मुंह बनाकर बोला।

बेटा! इन बच्चों की मजबूरी है। ये बहुत गरीब बच्चे हैं।- पापा ने समझाते हुये कहा ।

तो क्या हुआ? इनको ऐसा जूठा भोजन नहीं करना चाहिये । विज्ञ ने बड़ों जैसे बात करते हुये कहा।

बेटा! तुम्हें मम्मी रोज स्वादिष्ट भोजन बनाकर देती है तो तुम्हें इनका दुःख महसूस नहीं होगा।

पापा! मैं समझा नहीं। - विज्ञ ने जिज्ञासा से कहा।

पापा ने विज्ञ के कंधे पर हाथ रखकर कहा- देखो विज्ञ! इन बच्चों के माता-पिता बहुत गरीब हैं। इन बच्चों को भरपेट भोजन भी नहीं मिलता और मिलता भी है तो रुखा-सूखा। ये तो ऐसे ही अपना पेट भरते हैं और तुम जूठा भोजन छोड़ते हो और मम्मी आपको कुछ कहती है तो आपको बुरा लगता है।

और बेटा! एक बात और....- मम्मी ने विज्ञ से कहा - देखो! झूठे भोजन में कितने कीड़े और चींटी घूम रहीं हैं। ये सब अब मारे जायेंगे।

इसका मतलब यह हुआ कि झूठा भोजन छोड़ने से हिंसा का पाप भी लगता है। विज्ञ ने समझदार बनते हुये कहा।

हाँ बेटा! झूठा भोजन छोड़ने से हानि ही हैं लाभ कुछ नहीं ...

विज्ञ कान पकड़कर बोला - सॉरी मम्मी! मैं सब समझ गया। मैं वादा करता हूँ आज के बाद कभी झूठा भोजन नहीं छोड़ूँगा।

शाबास मेरे बच्चे। मम्मी ने विज्ञ के सिर पर हाथ फेरते हुये कहा।

ये हैं छःखण्ड के चक्रवर्ती..

सम्राट चन्द्रगुप्त भटककर जंगल में एक गुफा के पास पहुँचे। गुफा से आवाज आ रही थी क्योंकि एक मुनिराज वहाँ किसी स्तोत्र का पाठ कर रहे थे। सम्राट ने पूछा - अन्दर कौन है भीतर से आवाज आई, मैं हूँ षट्खण्ड का विजेता चक्रवर्ती। सम्राट ने पूछा - वे छःखण्ड कौन से हैं जिन पर आपने विजय प्राप्त की है। मुनिराज बोले - मन, वचन, काय,राग, द्वेष और मोह जो आत्मा के शत्रु हैं।

क्या गजब किया

रज्जब की बारात जा रही थी। वहीं से रज्जब के गुरु दादु दयाल जा रहे थे। उन्होंने रज्जब को सिर पर मुकुट बांधे हुये घोड़े पर बैठा हुआ देखा तो उसके पास जाकर बोले - रज्जब तू गजब किया, सिर पर बांधा मौर।

आये थे हरि भजन को, करे नरक का ठौर।।

यह सुनकर रज्जब घोड़े से नीचे कूद गया और अपने गुरु के साथ चला गया। सब बाराती देखते रह गये।

परिवर्तन

पात्रकेसरी वेदों के निष्णात ज्ञाता विद्वान् थे, इनके पाँच सौ शिष्य थे, उनकी राज्य में बड़ी प्रतिष्ठा थी। एक दिन संध्या के पूर्व अपने शिष्य समुदाय के साथ पार्श्वनाथ मंदिर के पास से जा रहे थे। उस मंदिर में संस्कृत श्लोकों की सुन्दर ध्वनि उनके कान में सुनाई पड़ी। उसकी आकर्षक ध्वनि को सुनकर वे धीरे-धीरे जैन मंदिर पहुँच गये। वहाँ उन्होंने देखा कि एक मुनिराज देवागम स्तोत्र का पाठ कर रहे थे। पात्रकेसरी ने एक बार पूरा पाठ सुनकर उसे अपनी स्मरण शक्ति से याद कर लिया इसके बाद उसका अर्थ समझाया जिससे उन्हें जैन धर्म का रहस्य समझ में आ गया। वे अपने शिष्यों सहित दिगम्बर मुनि बन गये। बाद में उन्होंने अनेक वैदिक विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित किया।

उस बच्ची की भावना सैकड़ों बच्चों की प्रेरणा बन गई

बात अभी दशलक्षण महापर्व की है। मैं मध्यप्रदेश के गुना नगर में स्वाध्याय के लिये गया था। यहाँ स्थानीय जिनमंदिर के छत पर पंचतीर्थ की रचना का निर्माण होने वाला है। जिसमें 24 तीर्थंकर भगवन्तों के लिये 24 टोंकों का निर्माण किया जाना है। संस्था ने प्रत्येक टोंक निर्माण की दान राशि 1 लाख रुपये निर्धारित करके सभा में सहयोग की अपील की। यह सुनकर घर पर श्री रोहित जैन की बच्ची कु. महक अपने पिता से बोली - पापा! एक टोंक मेरी ओर से भी बनवा देना। रोहितजी ने बच्ची के बालपन पर मुस्कराते हुये पूछा कि बेटा! आप टोंक बनवाने के लिये इतने रुपये कहाँ से लाओगी ? बच्ची ने मासूमियत से जबाब दिया - मेरी गुल्लक के सारे रुपये ले लीजिये और एक टोंक बनवा दीजिये।

यह सुनकर रोहितजी का मन भावना से भर गया, उन्होंने दूसरे दिन ही अपनी बच्ची की भावना सभा में बताई और निवेदन किया कि यदि 100 बच्चे अपनी ओर से मात्र 1000-1000 रु. देगें तो एक टोंक का निर्माण बच्चों की ओर से किया जा सकता है । इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुये सभी ने तालियों से समर्थन किया और लगभग 200 बच्चों की ओर से इसकी सहमति हो गई और अब दो टोंकों का निर्माण बच्चों की ओर से किया जायेगा। इस पंचतीर्थ का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दिसम्बर 2016 में प्रस्तावित है।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

लघु कथा

जैसी करनी वैसी भरनी

एक राजा था। वह बहुत क्रूर और अन्यायी था। इसलिए उसकी प्रजा बहुत दुःखी थी।

एक दिन सैनिक (घोषणा करता हुआ)

राजा ने तय किया है कि आज से राज्य में किसी के साथ अन्याय नहीं होगा, किसीको कष्ट नहीं होगा। महाराज की जय हो!

राजा ने अपना वचन निभाया। धीरे-धीरे वह एक आदर्श राजा के रूप में पहचाने जाने लगे।

इस परिवर्तन से सभी बहुत आश्चर्यचकित थे। एक दिन..

महाराज की जय हो! आपसे प्रजा अत्यंत खुश और संतुष्ट है। आप के हृदय परिवर्तन का कारण जान सकता हूँ?

. यह देखकर मैंने सोचा, 'खराब काम का परिणाम खराब ही आता है।' यदि मैं अपनी क्रूरता जारी ही रखूँगा तो मुझे भी क्रूरता का परिणाम भुगतना पड़ेगा। ऐसा सोचकर मैंने आदर्श जीवन जीने का निश्चय किया।

अब राजा पर चढ़ाई करने का समय आ गया है। क्योंकि राजा कोई उल्टा कदम नहीं उठाएँगे और हम जीत जाएँगे।

इतने में तो.... मंत्री विचार में खो गए और सीढ़ी को देख नहीं पाए और गिर गए और उनकी गर्दन में मोच आ गई।

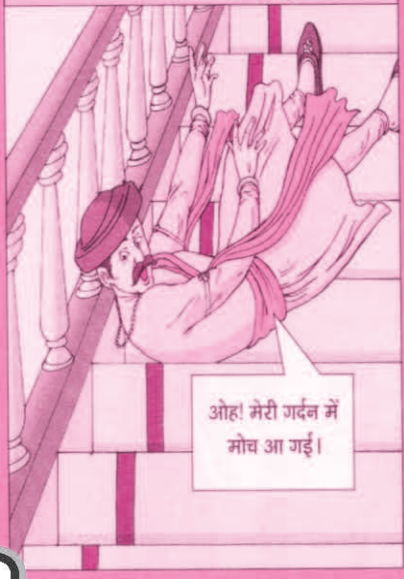

ओह! मेरी गर्दन में मोच आ गई।

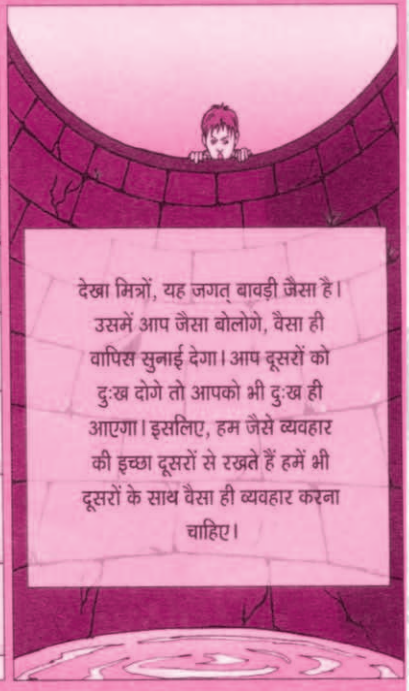

देखा मित्रों, यह जगत् बावड़ी जैसा है। उसमें आप जैसा बोलोगे, वैसा ही वापिस सुनाई देगा। आप दूसरों को दुःख दोगे तो आपको भी दुःख ही आएगा। इसलिए, हम जैसे व्यवहार की इच्छा दूसरों से रखते हैं हमें भी दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

एक दिन मैं शिकार करने गया था। वहाँ मैंने एक जंगली कुत्ते को लोमड़ी को काटते हुए देखा। काट-काटकर उसने लोमड़ी का पैर तोड़ दिया।

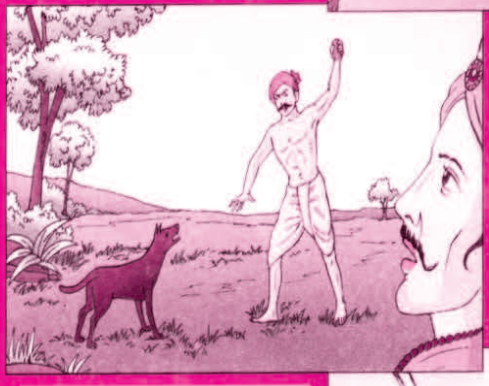

फिर मैंने उस कुत्ते को गाँव में एक आदमी के सामने भौंकते हुए देखा। आदमी ने एक बड़ा पत्थर उस पर फेंककर उसका पैर तोड़ दिया।

वह आदमी थोड़ी ही दूर गया था कि, वहाँ एक घोड़े ने उसे ज़ोर से लात मारी। उसका घुटना टूट गया।

घोड़ा दौड़ते-दौड़ते एक गड्ढे में गिर गया और उसका पैर टूट गया।

प्रेम में बोझा नहीं

एक साधु पहाड़ चढ़ रहा था। दोपहर का समय था, तेज सूरज चमक रहा था। साधु के कंधे पर बोझा था - किताबें, कपड़े आदि। वह पसीने से पूरा भीग गया था। चढ़ाई अभी बहुत बाकी थी। उसी समय साधु ने देखा कि एक पन्द्रह वर्ष का लड़का अपने कंधे पर एक बच्चे को लिये पहाड़ चढ़ रहा था। वह भी पसीने से पूरी भीग गया था,परन्तु चेहरे पर थकान के निशान नहीं थे।

साधु को उस बच्चे पर दया आ गई और उससे पूछा - बेटा! बहुत बोझा लग रहा होगा। लड़के ने साधु को ऊपर से नीचे तक देखा और कहा - बाबाजी ! बोझा तो आपके पास है। यह तो मेरा भाई है, और भाई बोझा नहीं होता।

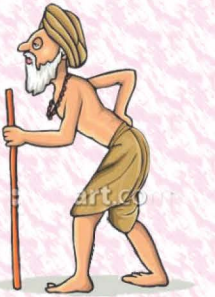

जहाँ प्रेम है वहाँ कष्ट नहीं होता। अज्ञानी जीव तप-धर्म आचरण में कष्ट अनुभव करता है। वह तो आनन्द का कार्य है। ज्ञानी तप करके आनन्द मानता है क्योंकि उसे आत्मा से प्रेम है और आत्मकल्याण के लिये कार्य कष्टदायक नहीं, आनन्ददायक होते हैं।

शांति

एक साधु जंगल में अत्यन्त निश्चिंतता से पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। उसके शरीर पर बहुत कम वस्त्र थे, पैरों चप्पल भी नहीं थी।

वहाँ से निकलते समय राजा ने साधु को देखा तो उसे साधु की हालत पर दया आ गई। वह सोचने लगा - मेरे राज्य में यह व्यक्ति इतना दयनीय हालत में है, यह बात अच्छी नहीं है। वे साधु के पास गये और विनयपूर्वक बोले - हे संत! आप मेरे राज्य में इतने अभावों में जी रहे हैं, इसके लिये मैं शर्मिन्दा हूँ। आप ये वस्त्र और जूते ले लीजिये। साधु ने मुस्कराते हुये पूछा - राजन्! इन वस्त्रों को गन्दे होने पर कौन साफ करेगा? राजन् बोले- आप चिन्ता न करें, मैं इसके लिये सेवकों की व्यवस्था कर दूँगा।

इन सेवकों को धन कौन देगा ? - साधु ने पूछा। राजा बोला - मैं आपको दो गांव दे दूँगा और उसकी खेती की फसल बेचकर आपके पास धन आयेगा। साधु ने फिर पूछा - फिर इस धन का हिसाब कौन देखेगा? राजा बोला - आप विवाह कर लेना तो आपकी पत्नी यह कार्य देखेगी। फिर आपकी संतान हो जायेगी तो आपका सारा कार्य वे संभाल लेंगे।

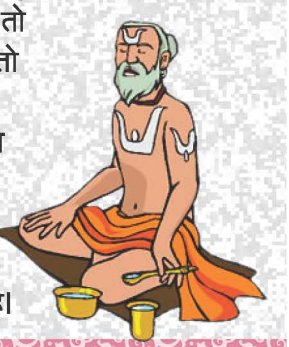

साधु ने पूछा - फिर मैं क्या करुँगा ? राजा बोला - फिर आप शांति से आराम करना। साधु ने कहा - वो आराम तो मैं अभी ही कर रहा हूँ तो इतना विकल्प करने से क्या लाभ ?

राजा को अपनी भूल का एहसास हो गया, वह समझ गया उसने जिसे गरीब समझा था, वह संतोष के धन से धनवान है।

प्रधानमंत्री ने मान ली बात

बात 1990 की है जब भारत के प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह थे। वे भेड़ के बच्चे की चमड़ी से बनी फर वाली टोपी पहना करते थे। उन्हें आदर्श मानकर देश के अनेक लोगों ने वैसी ही टोपी पहनना प्रारम्भ कर दी थी। इसके कारण अनेक पशु प्रेमी उनकी आलोचना किया करते थे। तब उनके मंत्रिमण्डल की मंत्री श्रीमति मेनका गांधी ने उन्हें नकली फर की तीन टोपियाँ भेंट कीं और उनसे चमड़े की टोपी के स्थान पर नकली फर की टोपी पहनने का आग्रह किया।

तब प्रधानमंत्री ने अपनी गल्ती स्वीकार करते हुये उनकी बात मान ली और पत्र लिखकर कहा कि कई बार अज्ञानता के कारण गल्ती हो जाती है, इसके लिये मैं शर्मिन्दा हूँ और आगे से कृत्रिम फर की ही टोपी पहनने का संकल्प लिया है।

अनुशासन

प्रसिद्ध व्यक्तित्व गोविन्द रानाडे के पास किसी परिचित ने कीमती अल्फांसो आम का टोकरा भेजा। भोजन के समय उनकी धर्मपत्नी रमाबाई रानाडे आम ले आईं और उन्होंने चाकू से एक आम बनाकर दिया। गोविन्दजी ने कहा - बस ! अब और नहीं चाहिये।

क्यों और लीजिये, न क्या स्वादिष्ट नहीं हैं ? - पत्नी ने पूछा।

नहीं, स्वादिष्ट तो बहुत हैं, पर इससे अधिक खाना मेरे स्वाद के अनुशासन से बाहर होगा। गोविन्दजी ने कहा - ये आम कीमती हैं। मैं इन्हें इतना ही खाना चाहता हूँ जितने से जीभ की आदत न बिगड़े और जितना मैं खरीदकर खा सकूँ। किसी ने भेंट किये इसीलिये ज्यादा खाना मेरी नजर में अनुशासनहीनता होगा। यह सुनकर उनकी धर्मपत्नी ने श्रद्धा से सिर झुका लिया।

कविता -

खेल रेल का खेल

आओ हम सब खेलें खेल,
इक इंजन बाकी सब रेल।।

छुक-छुक-छुक चले चलो,
पाठशाला को चले चलो।
ठहरो ताला खुला नहीं,
सबके सब अब रुको यहीं।। आओ हम...।।

छुक-छुक-छुक-छुक चले चलो।
मन्दिरजी को चले चलो।
रेल जायेगी कहीं नहीं,
दर्शन कर लो सभी यहीं।। आओ हम...।।

छुक-छुक-छुक-छुक चले चलो।
जंगल-जंगल चले चलो।
श्री आचार्य जी मिले कहीं,
दीक्षा ले लो सभी यहीं।। आओ हम...।।

छुक-छुक-छुक-छुक चले चलो ।
आत्मध्यान में जमे चलो ।।
लौट के आना कभी नहीं,
मोक्ष-महल में मिलें सभी ।। आओ हम...।।

- ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन

चमड़े की पहचान

आपको मालूम ही होगा कि चमड़े में प्रतिसमय अनंत जीव उत्पन्न होते हैं और मरते हैं। आजकल चमड़े तथा बिना चमड़े वाले अर्थात् सिन्थेटिक/रेग्जीन के बेल्ट आदि का रंग-रूप एक जैसा दिखाई देता है। कभी-कभी सिन्थेटिक की अपेक्षा चमड़े की वस्तुयें सस्ती मिल जातीं हैं। यदि हम दुकानदार से पूछें कि भाई साहब ! यह चमड़े की तो नहीं है ना । तो दुकानदार भी समझ जाता है कि ये चमड़ा नहीं पहनते तो वह अपना माल बेचने के लिये झूठ बोल देता है और चमड़े की वस्तुयें सिन्थेटिक की कहकर दे देता है। यदि हमें चमड़े पहचानने की कला होगी तो हम कभी भी अपने जीवन में चमड़े की वस्तुयें पहनने का पाप नहीं करेंगे। आइये जानें चमड़े की पहचान कैसे करें -

- चमड़े की फोल्ड कर देने पर भी वह टूटता नहीं, लोच खाकर फिर सीधा हो जाता है।
- चमड़े के बीच सलवटें होतीं हैं, उसकी सतह समान नहीं होती।
- चमड़े को थोड़ा मोड़कर सूंघने से उसमें से बदबू आती है।
- चमड़े की वस्तुओं का अंदर का भाग रेशेदार होता है, उसमें सपोर्ट के लिये कपड़ा आदि नहीं लगाया जाता।

चमड़े की वस्तुयें पहनने वाले को हिंसा के महापाप का बंध होता है और दुर्गति प्राप्त होती हैं। प्रतिदिन कत्लखानों में होने वाली लाखों पशुओं की हत्या में निमित्त न बनें और चमड़े का त्याग करें।

जिस प्रकार चूहे फूँक-फूँककर पाँव आदि खाते हैं और फूँककर ही काटते हैं, इसलिये नींद में पता नहीं चलता, उसी प्रकार परिवार के सदस्य-सगे सम्बन्धी प्रशंसा करके हमारा जीवन खाते हैं इसलिये अज्ञानी जीव का पता को नहीं चलता....।

अद्भुत- राजा

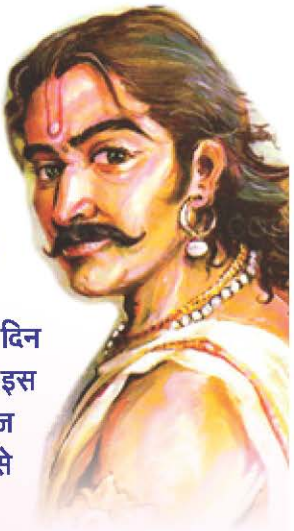

महाराज उदयन बड़े दानी थे, वे प्रतिदिन प्रातः काल अपने हाथ से ही गरीबों को अनाज-वस्त्र का दान करते थे। एक दिन कर्मचारी ने उनसे प्रार्थना की कि महाराज ! यह काम तो मैं भी कर सकता हूँ, इसमें आप अपना इतना समय क्यों बरबाद करते हैं

राजा ने उत्तर दिया - भाई ! समय की असली बरबादी तो दिन भर राज्य कार्यों में होती है। यह समय तो बड़ा सार्थक है क्योंकि इस समय पदार्थों से ममता नहीं छूटी तो जीवन के अन्त समय में भी राज वैभव से ममत्व बना रहेगा और दुर्गति होगी। मैं तो ममता परिणाम से मुक्त होने का प्रयास कर रहा हूँ।

इतने भले परिणाम होने पर भी एक गरीब व्यक्ति दान लेने उनके पास कभी नहीं आता था। जैसे ही राजा को यह पता चला तो वे स्वयं ही अनाज और वस्त्र लेकर उसके घर पहुँचे और उस गरीब आदमी से कहा - धर्मबन्धु ! हम आपको कुछ नहीं दे सकते, पर हमें आपसे कुछ चाहिये। वह व्यक्ति घबराकर बोला- हे स्वामिन् ! ये आप क्या कह रहे हैं आप तो आदेश दीजिये मैं आपको क्या दे सकता हूँ ? राजा बोला कि आप यह छोटी से भेंट लेकर मुझ पर कृपा कर दीजिये।

राजा के ऐसे वचन सुनकर उस आदमी के आंख में खुशी से आंसू आ गये।

नेपाल में निकली दिगम्बर जैन मूर्ति

इतिहास के जानकारों के अनुसार विश्व का सर्वाधिक प्राचीन धर्म जैन धर्म है। पहले सम्पूर्ण विश्व जैन धर्म का अनुयायी था। समय-समय पर खुदाई में मिलने वाले जैन मंदिर एवं जैन प्रतिमायें इस बात की सिद्धि करती हैं। भारत के विभिन्न राज्यों में तो जैन मंदिर मिलते रहे हैं, लेकिन विश्व के अनेक देशों चीन, कम्बोडिया, ईरान, पाकिस्तान, बर्मा, आदि में भी जैन मंदिर मिलते रहे हैं।

अभी कुछ ही दिन पूर्व नेपाल के एक घर निर्माण के लिये नींव खुदाई में जैन प्रतिमा निकली। यह प्रतिमा दिगम्बर जैन धर्म की पद्मासन मुद्रा की है।

मैं पूछूं एक पहेली

1 रत्न महल के ऊपर बैठे, कभी न करते हैं स्पर्श।
बोल रहे पर मुख न खोले, जीवन उनका है आदर्श।।

2 रंग नहीं रूप नहीं, आकाश नहीं कहना।
स्वर नहीं भर नहीं, हम तुममें ही रहना।

3 खाई थी, पर देखी नहीं, और कभी चखी नहीं।

4 खाता पीता लड़ता मरता, सब कुछ करता दिखता है।
किन्तु हाथ कभी नहीं आता है, जो देखे उसको
वह पाप बंध ही करता है।

5 चार ड्राइवर एक सवारी। उसके पीछे जनता भारी।।

6 आओ बच्चो तुम्हें सुनायें, सुन्दर एक कहानी।
जन्म लेकर आये वो, मौत कभी न आनी।

7 जो स्वतंत्रता हमें सिखाता, नहीं दासता का कुछ काम।
जिसने सब भगवान बनाये, बतलाओ तुम उसका नाम।।

विशेष - पहेली के उत्तर इसी अंक में है ।

अब नहीं फोड़ूँगा

उत्सव -अरे पर्व! भाई सुबह-सुबह कहाँ चले दिये?

पर्व -क्या बताऊँ उत्सव! मेरा बेटा दीप कल से बाजार जाने की जिद कर रह है। कल शाम से उसने भोजन भी नहीं किया।

उत्सव - अरे ! यह क्या बात हुई पर्व! तुमने उसे समझाया नहीं...।

पर्व - (बीच में टोककर) अरे भाई! कितना समझाया लेकिन मानता हीं नहीं.....।

उत्सव - तो फिर तुमने क्या सोचा ? तुम इतने समझदार होकर भी उसे पटाखे लाकर दोगे...?

पर्व - तो फिर क्या करूँ ? मन तो नहीं मानता लेकिन पर्व भूखा है यह देखा भी नहीं जाता।

उत्सव - आजकल के बच्चे तो बस इनकी इच्छायें पूरी करो और जब ये बड़े हो जायेंगे तो कहेंगे कि आपने हमारे लिये क्या किया ? तुम रुको मैं समझाकर देखता हूँ।

उत्सव -(घर पहुँचकर) दीप! क्या कर रहे हो।

दीप-बस अकल! बोर हो रहा हूँ। आप आईये ना अंकल। बैठिये।

उत्सव -तो चलो! आज तुम्हें एक जादू दिखाता हूँ।

दीप-कैसा जादू अंकल....!

उत्सव -बेटा! मैं जलती हुई मोमबत्ती पर तुम्हारा हाथ रखूँगा और तुम्हारा हाथ जलेगा भी नहीं।

दीप-ऐसे कैसे हो सकता हो अंकल! मैं अपना हाथ मोमबत्ती पर नहीं रख सकता।

उत्सव -क्यों बेटा!

दीप- मेरा हाथ जल जाऊँगा ना...।

उत्सव - वाह बेटा! तुम्हें अपने हाथ जलने का तो डर है परन्तु उन छोटे-छोटे जीवों को जलाकर ही मार डालना चाहते हो।

दीप- मैं कुछ समझा नहीं अंकल!

उत्सव - अरे तुमने कल अपने पापा से पटाखे लाने की जिद की थी और कल शाम से तुमने भोजन नहीं किया।

दीप- हाँ! लेकिन मैं दीपावली को एन्जॉय करना चाहता हूँ और मेरे सारे दोस्त ढ़ेर सारे पटाखे लाये हैं।

उत्सव - तुम किसी की हत्या करके आनन्द लेना चाहते हो। तुम्हारे थोड़े से और थोड़ी देर के आनन्द के लिये जलाये गये पटाखों की आग और आवाज असंख्यात जीवों की मौत बनकर आयेगी और क्या तुम्हारे दोस्त चोरी करेंगे तो क्या तुम भी चोरी करोगे

दीप- नहीं अंकल! लेकिन दीपावली पर्व तो हमारे भगवान का निर्वाण महोत्सव है तो क्या इसकी खुशियाँ नहीं मनायें ?

उत्सव - खुशियाँ मनाने के लिये मैंने मना नहीं किया। दीपावली मनाओं पर दूसरे तरीके से। जैसे गौतम स्वामी ने मनाई थी। गौतम स्वामी को महावीर भगवान महावीर के दिन हीं शाम को केवलज्ञान हो गया था। हम इस दिन भगवान महावीर की पूजन करें, उनकी शिक्षाओं का अध्ययन करें। तुम्हारा नाम तो दीप है। ऐसा कार्य करो जिससे जीवों का प्रकाश मिले, अंधेरा नहीं। तुम्हारा पटाखे फोड़ने का आनन्द अनन्त निर्दोष जीवों की मौत का कारण क्यों बने । अच्छा ! यह बताओ पटाखे फोड़ने से क्या लाभ है?

दीप- (कुछ देर सोचकर) कुछ भी नहीं बल्कि हानि ही हानि है।

उत्सव - शाबाश! तो फिर जिस कार्य में लाभ न हो, उसे करने से क्या लाभ? पटाखे फोड़ने से धन की बर्बादी, प्रदूषण, कचरा, आग लगना, जल जाना, जीव हिंसा जैसी हानियाँ ही हानियाँ हैं और.....

दीप- बस बस अंकल! मैं समझ गया। अब मैं पटाखे कभी नहीं फोड़ूँगा।

उत्सव - वाह! ये हुई ना बात और अब ज्ञान और आनन्द की दीवाली मनायेंगे।

- विराग शास्त्री

आपके प्रश्न-जिनागम के उत्तर

प्रश्न-1. भगवान को फूल चढ़ाने में क्या दोष है ?

उत्तर - फूलों में त्रस जीव होते हैं अतः इनकी हिंसा होती है। फूलों का प्रयोग तो हमें लौकिक कार्यों में भी नहीं करना चाहिये।

प्रश्न-2. बिजली के जलते बल्ब में अग्निकायिक जीव होते हैं या नहीं ?

उत्तर - जलते बल्ब में अग्निकायिक जीव होते हैं।

प्रश्न-3. क्या कोई पुरुष किसी आर्यिका के चरण स्पर्श कर सकता है ?

उत्तर - नहीं। कोई पुरुष किसी आर्यिका के चरण स्पर्श नहीं कर सकता। इससे दोनों के शील में दोष लगता है।

प्रश्न-4. सुना है कि पंचमकाल में कुछ द्रव्य लिंगी भ्रष्ट मुनि और उनके सेवक नरक में जायेंगे ?

उत्तर - इस पंचमकाल में साढ़े सात करोड़ नग्न मुद्रा धारी **परिग्रह धारण करने वाले** मुनि नरक में जायेंगे और इनके 55 करोड़ 65 लाख 25 हजार 520 सेवक पंचम काल में नरक में जायेंगे। चर्चा संग्रह पृष्ठ - 154

प्रश्न-5. जहाँ मुनिराज आहार करते हों वहाँ बल्ब क्यों नहीं जलाना चाहिये ?

उत्तर - मुनिराज जहाँ आहार करते हैं, वहाँ पूर्ण उजाला होना चाहिये। जहाँ अंधेरा हो वहाँ बल्ब जलाकर आहार नहीं देना चाहिये, इससे रात्रि भोजन का दोष लगता है।

प्रश्न-6. क्या सभी मोक्षगामी जीवों का खून सफेद होता है ?

उत्तर - सिर्फ तीर्थंकर के खून का रंग सफेद होता है, सभी मोक्षगामी जीवों का नहीं।

प्रश्न-7. इन्द्र तीर्थंकर भगवान का 1008 कलशों के जल से अभिषेक करते हैं तो क्या उसमें त्रस जीवों की हिंसा नहीं होती?

उत्तर - त्रिलोकसार ग्रन्थ के अनुसार कर्मभूमि से सम्बन्धित लवण समुद्र, कालोदधि समुद्र और अंतिम स्वयंभूरमण समुद्र में ही जलचर जीव पाये जाते हैं, अन्य समुद्रों में नहीं। तीर्थंकर का अभिषेक क्षीरसागर के जल से होता है, वहाँ जलचर जीव नहीं पाये जाते।

प्रश्न-8. जय जिनेन्द्र शब्द का अभिवादन में प्रयोग किसकी प्रेरणा से प्रारम्भ हुआ ?

उत्तर - आचार्य भद्रबाहु की प्रेरणा से ।

यदि आपके मन में कोई प्रश्न हो तो अवश्य भेजिये। हम उसका उत्तर आपके नाम सहित प्रकाशित करेंगे।

जैन धर्म का पालन करती है

कुक्कू चिड़िया

वह रात में नहीं खाती....
वह रात को पानी भी नहीं पीती...
वह कीड़े नहीं खाती....
वह बहुत शांत रहती है..
वह णमोकार मंत्र बड़े ध्यान से सुनती है...
वह घबराती नहीं है....

आप सोच रहे हैं ये किसकी बात कर रहे हैं...? बच्चो! हम बात कर रहे हैं एक चिड़िया की। यह चिड़िया जबलपुर के श्री राजेश जैन परिवार की सदस्य बन गई है। लगभग 1 वर्ष पूर्व परिवार के सदस्य श्रेय को यह चिड़िया घायल अवस्था में मिली, ऐसा लगता था कि किसी बिल्ली या कुत्ते ने इसका एक पंख तोड़ दिया हो। करुणा करके श्रेय इस चिड़िया को अपने घर पर लाया और परिवार के सदस्यों ने इसका घरेलू उपचार किया। परिवार के सदस्यों ने इसका नाम रखा कुक्कू। कुछ समय बाद कुक्कू जब ठीक हो गई तो इस छत पर छोड़ दिया, परन्तु एक पंख न होने के कारण कुक्कू उड़ नहीं पाई। फिर क्या था तभी से कुक्कू इस परिवार की सदस्य बन गई। परिवार के सदस्य इसका बहुत ध्यान रखते हैं।

परिवार का वातावरण अत्यंत धर्ममय है। कुक्कू के सामने दाना-पानी रखा होने पर भी रात में नहीं खाती, कीड़े आदि भी नहीं खाती। दिन भर पिंजरे के बाहर घूमती रहती है। सुरक्षा की दृष्टि से कुक्कू को मात्र रात्रि में ही पिंजरे में रखा जाता है क्योंकि एक बार एक बिल्ली ने कुक्कू के सिर पर पंजा मारकर घायल कर दिया था।

ऐसा लगता है यह कुक्कू पूर्व भव में जैन परिवार की सदस्य थी, किसी विराधना के कारण से वह चिड़िया की पर्याय में आ गई या आगे की पर्याय में उसका कल्याण होना है, जिसके कारण से धार्मिक जैन परिवार में आने का अवसर मिला।

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर को सहयोग प्राप्त

11000/- श्री जितेन्द्रकुमार कचरुलाल फलिसीया, बांसवाड़ा राज.
(परम सहायक सदस्यता हेतु)
600/- श्रीमती कल्पना सुरेश चंद जैन, उदयपुर
501/- श्री दुलीचन्द कमलेश जैन, खैरागढ़

हाथी की दया

एक भयानक जंगल था। उसमें बहुत से जानवर रहते थे। उस जंगल में एक दयालु हाथी रहता था। एक बार जंगल में आग लग गई और वह आग पूरे जंगल में फैलने लगी। सभी जानवर अपनी-अपनी जान बचाने के लिये यहाँ-वहाँ भागने लगे। लेकिन हाथी अपनी सूंडों से जंगल के पेड़ों को तोड़-तोड़कर गिराने लगे और एक बड़ा मैदान बना दिया जिससे आग से बचकर सभी जानवर मैदान में आ सकें।

उस मैदान में वह हाथी आकर खड़ा हो गया और वह मैदान जानवरों से भर गया। हाथी के पास एक खरगोश भी आकर खड़ा हो गया। वहाँ हाथी को खुजली हुई तो उसने अपना एक पैर उठाया तो वह खरगोश पैर के नीचे आकर बैठ गया। अब हाथी सोच रहा था कि अगर मैं पैर नीचे रखूँगा तो खरगोश के प्राण चले जायेंगे, यह तो अच्छा नहीं होगा। किसी के प्राण लेने का महापाप मैं नहीं कर सकता।

हाथी ने अपना पैर ऊपर ही रखा। जंगल की आग तीन दिन तक जलती रही। इतना विशाल शरीर होने के कारण हाथी का शरीर अकड़ गया। आग बुझने के बाद सारे जानवर मैदान छोड़कर चले गये। जब हाथी ने अपना पैर नीचे रखने की कोशिश की तो वह नीचे गिर गया। तीन दिन भोजन न मिलने से वह कमजोर भी गया था, अब वह न उठ सकता था और न ही चल सकता था।परन्तु वह खरगोश के प्राण बचाने के कारण बहुत प्रसन्न था और अपने अंतर में शांति का अनुभव कर रहा था। कमज़ोरी के कारण कुछ दिन बाद उसके प्राण निकल गये।

जीव दया के शुभ भाव से मरकर उस ने हाथी राजा श्रेणिक के यहाँ जन्म लिया और राजकुमार बना। राजा ने उसका नाम मेघकुमार रखा। मेघकुमार बड़ा होने लगा, उसके संस्कार पूर्व से ही कोमल थे। एक बार भगवान महावीर का समवशरण आया और भगवान की मंगल वाणी सुनकर मेघकुमार को वैराग्य हो गया और उसने मुनि दीक्षा ले ली। मेघकुमार अब मेघ मुनि बनकर घोर तपस्या करने लगा और आत्म साधना के बल से उसने मोक्ष प्राप्त किया।

बच्चो! अब आपको समझ में आ गया होगा कि जीव दया के परिणाम से दूसरे जीवों के प्राण तो बचते ही हैं साथ हमारा भी कल्याण हो सकता है।

चेत चेतन चेत

इस फोटो में जो आप बहनें देख रहे हैं ये बूढ़ी नहीं बल्कि 8 वर्षीय दो बहनें हैं। नाम निहाल कुमार उम्र-13 वर्ष, वजन-12.5 किलो एक बीमारी के कारण इनका चेहरा बूढ़े के समान लग रहा है।

एक बच्चा ऐसा भी.....

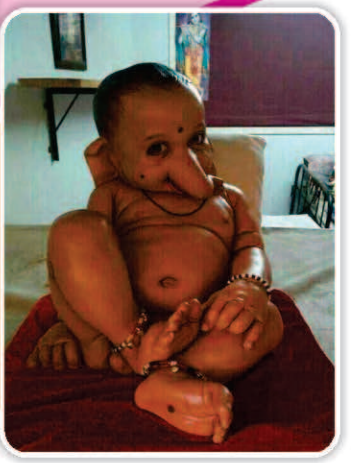

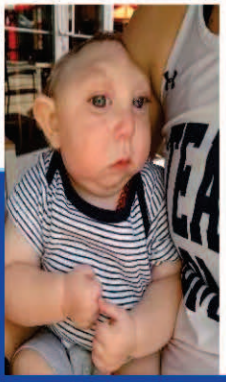

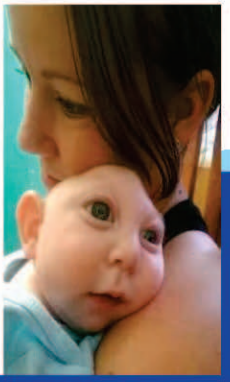

बिना सिर वाला बच्चा ... कर्म की गति की न्यारी-न्यारी....

यूरोप में जन्मे इस बच्चे का नाम जैक्सन एमेट वुएल है। इसकी उम्र एक वर्ष है। इस बालक का जन्म से ही सिर नहीं है। इसके चेहरे की शुरुआत माथे से ही होती है। इसे माइक्रो हाइड्रोनेन सिफैली नामक की बीमारी के कारण हुआ है। डॉक्टर के अनुसार इसकी बचने संभावना बहुत कम थी परन्तु आयु कर्म के कारण यह बालक अब स्वस्थ है।

क्या आप भी चाहते हैं कि आपका परिवार जिनधर्म को जाने, समझे और सुखी रहे

क्या आप अपने बच्चों को जिनधर्म के संस्कार देना चाहते हैं तो

आज ही सम्पूर्ण जैन समाज की एक मात्र धार्मिक बाल पत्रिका

चहकती चेतना के सदस्य बनिये

नाम .....

पिता का नाम .....

घर का पता .....

फोन नं.....मोबाइल .....

ई-मेल .....

इनमें से एक पर निशान लगायें

☐ अवधि - तीन वर्ष - 400 रुपये ☐ अवधि - दस वर्ष - 1200 रुपये

चेक/ ड्राफ्ट / मनीआर्डर से चहकती चेतना, जबलपुर के नाम से भेजें।

चहकती चेतना

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संपादक-विराग शास्त्री

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, लाल स्कूल के पास, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र.

मोबाइल नं. - 09300642434 ई मेल - chehaktichetna@yahoo.com

सहयोग आमंत्रित

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है ।

शिरोमणि संरक्षक	- 1 लाख रुपये	परम सहायक	- 21 हजार रुपये
परम संरक्षक	- 51 हजार रुपये	सहायक	- 11 हजार रुपये
संरक्षक	- 31 हजार रुपये	सहायक सदस्य	- 5 हजार रुपये
		सदस्य	- 1 हजार रुपये

प्रत्येक सहयोगी को सदस्य को छोड़कर चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें । आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101026079 में जमा करा सकते हैं ।

देखो-देखो

जीव की विराधना का फल

देखिये जगत के इन जीवों को ...।
इन्हें देखकर हमें अपार करुणा
आये और हम स्वयं भी पापों से
बचकर धर्म की शरण प्राप्त करें....

ऐसी भावना.....

चीन के
चिड़ियाघर में है
यह विचित्र शेर.....

गुरुवाणी मंथन शिविर की झलकियाँ